पाठ – जलाते चलो

कविता का सारांश

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि है। इन्होंने बाल साहित्य से सम्बन्धित अनेक रचनाएँ लिखी है। इसके द्वारा लिखित 'हम सब सुमन एक उपवन के' जैसे गीत आज भी अत्यन्त लोकप्रिय है।

कवि ने मनुष्य को प्रगति पथ पर चलने के लिए अग्रसर किया है। दीप के द्वारा हो अन्धकार को समाप्त किया जा सकता है। विज्ञान की शक्ति पूर्णिमा के समान है। कवि मनुष्य को निरन्तर नाव चलाने के लिए कहता है जिससे किनारा मिल सके। अन्धकार की शिला पर निरंतर दिये जलाए जाने चाहिए जिससे व्यक्ति को सच्चा पय प्राप्त हो सके। अज्ञान से ज्ञान की और मनुष्य बढ़ सके। इस बात पर कवि ने जोर दिया है।

शब्दार्थ

- **जलाते चलो** – प्रकाशित करना
- **धरा** – धरती
- **निहित** – विद्यमान
- **विश्व** – संसार
- **निशा** – रात
- **विद्युत** – बिजली
- **पथ** – रास्ता
- **तिमिर** – अँधेरा
- **चुनौती** – ललकार
- **सरित** – नदी
- **शिला** – पत्थर, चट्टान
- **अनगिनत** – जिनकी कोई गिनती न हो
- **साक्षी** – गवाह
- **ज्योति** – प्रकाश
- **उजेला** – उजाला
- **लौ** – ज्योति, प्रकाश
- **स्वर्ण-सी** – सोने के सामान

काव्यांशों की व्याख्या

काव्यांश-1

जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर
कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।
भले शक्ति विज्ञान में है निहित वह
कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी
मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में
घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।
बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो
बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा ॥

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ, 'जलाते चलो' कविता से अवतरित हैं, जिनके रचयिता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हैं।

प्रसंग – कवि ने मनुष्य को सफलता के पथ पर अग्रसर किया है।

egyanarchive

व्याख्या – कवि कहता है कि अपने मन के भीतर के दिये को प्रेम से भर-भरकर जलाते चलो तभी पृथ्वी पर व्याप्त अंधकार को समाप्त किया जा सकता है। भले ही शक्ति विज्ञान में निहित क्यों न हो अर्थात् विज्ञान ने बहुत प्रगति कर ली है जिससे हम अमावस की रात को भी पूर्णिमा बना लेते हैं। कवि बताता है कि विज्ञान कितना आगे बढ़ गया है फिर भी हमारे दिन आज अमावस की तरह अंधकार में हो गए हैं। अर्थात् मनुष्य को बुराईयों ने जकड़ लिया है। बिना प्रेम के हम केवल बिजली के दिये जला रहे हैं। इन्हें बुझाना पड़ेगा अन्यथा पथ प्राप्त नहीं हो सकेगा। इसलिए हमें अपने भीतर की बुराईयों को समाप्त करना पड़ेगा।

काव्यांश-2

जला दीप पहला तुम्ही में तिमिर की
चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी,
तिमिर की सरित पार करने तुम्हीं ने
बना दीप की नाव तैयार की थी।
बहाते चलो नाव तुम यह निरंतर
कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा ॥
युगों से तुम्ही ने तिमिर की शिला पर
दिये अनगिनत हैं निरंतर जलाए,
समय साक्षी है कि जलते हुए दीप
अनगिन तुम्हारे पवन ने बुझाए।

प्रसंग – अंधकार के विषय में बताया गया है।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ जलाते चलो' कविता से अवतरित हैं, जिनके रचयिता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी है।

व्याख्या – कवि कहता है कि प्रेम का पहला दीप जलाकर मनुष्य ने अंधकार को चुनौती दी। अंधकार की नदी पार करने के लिए तुमने दीपक की नाव तैयार की थी। दुनिया में कितनी बुराई क्यों न हो तुम निरन्तर प्रेम की नाव चलाते चलो। कभी तो अंधकार से मुक्ति प्राप्त होगी।

अंधकार की शिला पर मनुष्यों ने युगों से निरन्तर अनगिनत दिये जलाए हैं। यह समय गवाह है कि जलते हुए अनगिनत दीप तुम्हारे पवन अर्थात् वायु ने ही बुझाए हैं। मनुष्य अपने भीतर की बुराई समाप्त करके ही मानव जाति का कल्याण कर सकता है।

काव्यांश-3

मगर बुझ स्वयं ज्योति जो दे गए वे
उसी से तिमिर को उजेला मिलेगा।
दिये और तूफान की यह कहानी
चली आ रही और चलती रहेगी,
जली जो प्रथम बार ली दीप की
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी।
रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।

सन्दर्भ – प्रस्तुत पंक्तियाँ जलाते चलो' कविता से अवतरित हैं, जिनके रचयिता द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी हैं।

प्रसंग – दिये और तूफान के माध्यम से प्रकाश के महत्त्व को समझाया है।

व्याख्या – कवि कहता है कि प्रेम के ये दीपक जो बुझ गए हैं, उन्हें स्वयं की ज्योति अर्थात् स्वचेतना के माध्यम से ही मन के भीतर के उन दीपक को जलाना चाहिए जिससे अंधकार को प्रकाश जरूर मिलेगा। संसार में बहुत महान पुरुषों का जन्म हुआ है। वे अब जीवित न हो लेकिन उनकी शिक्षाएँ आज तक जीवित है। संसार को प्रेरणा दे रही हैं। दिये और तूफान की जो कहानी है वह लम्बे समय से चलती आ रही है और चलती रहेगी। दीप की जो लौ है स्वर्ण जैसी. यह सदैव उसी प्रकार जलती रहेगी। पूर्वजों ने प्रेम की लौ पहले ही जला दी थी। इस संसार में एक भी प्रेम का दिया रहेगा, अर्थात् महान पुरुष जीवित होगा, वह संसार को अंधकार में से बाहर निकाल देगा।

मेरी समझ से

(क) दिए गए प्रश्नों का सटीक उत्तर कौन – सा है? उसके सामने तारा (☆) बनाइए।

(1) निम्नलिखित में से कौन-सी बात इस कविता में मुख्य रूप से कही गई है?

- भलाई के कार्य करते रहना
- दीपावली के दीपक जलाना
- बल्ब आदि जलाकर अंधकार दूर करना
- तिमिर मिलने तक नाव चलाते रहना

उत्तर – भलाई के कार्य करते रहना (☆)

(2) "जला दीप पहला तुम्हीं ने तिमिर की, चुनौती प्रथम बार स्वीकार की थी" यह वाक्य किससे कहा गया है?

- तूफ़ान से
- मनुष्यों से
- दीपकों से
- तिमिर से

उत्तर – मनुष्यों से (☆)

(ख) अब अपने मित्रों के साथ चर्चा कीजिए और कारण बताइए कि आपने ये उत्तर ही क्यों चुने?

उत्तर – हमने इन उत्तरों को इसलिए चुना है क्योंकि इनका वर्णन पाठ के अन्तर्गत हुआ है।

मिलकर करें मिलान

कविता में से चुनकर कुछ शब्द यहाँ दिए गए हैं। इन्हें इनके सही अर्थों या संदर्भों से मिलाइए।

शब्द
1. अमावस
2. पूर्णिमा
3. विद्युत-दिये
4. युग

अर्थ या सन्दर्भ
1. पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है।
2. विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक बल्ब आदि उपकरण।
3. समय, काल युग संख्या में चार माने गए हैं- सत्ययुग (सतयुग) त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग।
4. अमावस्या, जिस रात आकाश में चन्द्रमा दिखाई नहीं देता।

उत्तर –

शब्द	अर्थ या सन्दर्भ
1. अमावस	4. अमावस्या, जिस रात आकाश में चन्द्रमा दिखाई नहीं देता।
2. पूर्णिमा	1. पूर्णमासी, वह तिथि जिस रात चंद्रमा पूरा दिखाई देता है।
3. विद्युत-दिये	2. विद्युत दिये अर्थात बिजली से जलने वाले दीपक बल्ब आदि उपकरण।
4. युग	3. समय, काल युग संख्या में चार माने गए हैं- सत्ययुग (सतयुग) त्रेता युग, द्वापर युग और कलियुग।

पंक्तियों पर चर्चा

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ नीचे दी गई हैं। इन्हें ध्यान में पढ़िए और इनका क्या अर्थ है? लिखिए-

"दिये और तूफान की यह कहानी
चली आ रही और चलती रहेगी,
जली जो प्रथम बार लौ दीप की
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी ॥
रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा।"

उत्तर – इन पंक्तियों का यह अर्थ है कि दिये और तूफ़ान की यह कहानी निरन्तर चलती रहेगी और यह पहले से चलती आ रही है। दिये वह महापुरुष हैं जिन्होंने मानव का पथ प्रदर्शन किया है। जब दिया पहली बार जलाया गया तब से अब तक उसकी लौ स्वर्ण की भाँति निरन्तर जल रही है। यदि पृथ्वी पर निशा अर्थात् रात्रि रहेगी तो कभी-न-कभी सवेरा अवश्य मिलेगा अर्थात् यदि संसार में बुराई बढ़ जाएगी तो एक-न-एक दिन कोई महापुरुष अपने प्रेम से इस बुराई रूपी रात्रि को समाप्त कर देगा।

सोच-विचार के लिए

कविता को एक बार फिर से पढ़िए और प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए किन वस्तुओं के उदाहरण दिए गए हैं?

उत्तर – कविता में अँधेरे या तिमिर के लिए अमावस तिमिर की शिला, तिमिर का किनारा तूफ़ान जैसे शब्दों का प्रयोग किया है।

(ख) यह कविता आशा और उत्साह जगाने वाली कविता है। इसमें क्या आशा की गई है? यह आशा क्यों की गई है?

उत्तर – इसमें यह आशा की गई है कि संसार स्नेह से परिपूर्ण हो जाए और स्नेह के माध्यम से अँधकार को समाप्त कर दिया जाए। कवि संसार में प्रेम को लाना चाहता है।

(ग) कविता में किसे जलाने और किसे बुझाने की बात कही गई है?

उत्तर – कविता में प्रेम के दिये को जलाने और अंधकार को बुझाने की बात की गई है।

कविता की रचना

"जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर, कभी तो धरा का अँधेरा मिटेगा।"

(क) इस कविता को एक बार फिर से पढ़िए और अपने-अपने समूह में मिलकर इस कविता की विशेषताओं की सूची बनाइए. जैसे इस कविता की पंक्तियों को 2-4, 2-4 के क्रम में बाँटा गया है आदि।

उत्तर – कविता की विशेषता इस प्रकार है-

(i) इस कविता की गीत की तरह गाया जा सकता है।

(ii) कविता में प्रेम पर बल दिया है।

(iii) कविता में अंधकार को समाप्त करने की बात की है।

मिलान

स्तम्भ 1 और स्तम्भ 2 में कुछ पंक्तियाँ दी गई हैं। मिलते-जुलते भाव वाली पंक्तियों को रेखा खींचकर जोड़िए-

स्तम्भ-1	स्तम्भ-2
1. कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।	1. विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा।
2. जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।	2. विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है?
3. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।	3. विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा।
4. बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।	4. दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए।

उत्तर –

स्तम्भ-1	स्तम्भ-2
1. कभी तो तिमिर का किनारा मिलेगा।	3. विश्व की समस्याओं से एक न एक दिन छुटकारा अवश्य मिलेगा।
2. जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।	4. दूसरों के सुख-चैन के लिए प्रयास करते रहिए।
3. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है अमावस निशा-सी।	2. विश्व में सुख-शांति क्यों कम होती जा रही है?
4. बिना स्नेह विद्युत-दिये जल रहे जो बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिल सकेगा।	1. विश्व की भलाई का ध्यान रखे बिना प्रगति करने से कोई लाभ नहीं होगा।

अनुमान या कल्पना से

(क) ***"दिये और तूफान की यह कहानी***
चली आ रही और चलती रहेगी" दीपक और तूफान की यह कौन-सी कहानी हो सकती है जो सदा से चली आ रही है?

उत्तर – दीपक और तूफान की कहानी अर्थात् स्नेह और बुराई की कहानी सदा से चली आ रही है।

(ख) ***"जली जो प्रथम बार ली दीप की***
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी" दीपक को यह सोने जैसी ली क्या हो सकती है जो अनगिनत सालों से जल रही है?

उत्तर – दीपक की यह सोने जैसी लौ प्रेम भरे कार्य है जो अनगिनत सालों से लोगों को प्रेरणा दे रहे हैं।

शब्दों के रूप

"कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी"

'अमावस' का अर्थ है 'अमावस्या'। इन दोनों शब्दों का अर्थ तो समान है लेकिन इनके लिखने-बोलने में थोड़ा-सा अंतर है। ऐसे ही कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। इनमें मिलते-जुलते दूसरे शब्द कविता से खोजकर लिखिए।

उत्तर –

1. दिया	–	दिये
2. उजेला	–	उजाला
3. अनगिन	–	अनगिनत
4. सवेरा	–	सुबह
5. स्वर्ण	–	सोना
6. दिवस	–	दिन

अर्थ की बात

(क) "जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर"

इस पंक्ति में 'चलो' के स्थान पर 'रहो' शब्द रखकर पढ़िए। इस शब्द के बदलने से पंक्ति के अर्थ में क्या अंतर आ रहा है?

उत्तर – इस पंक्ति में चलो के स्थान पर रहो शब्द रखने पर जलाने के लिए कहा है। पंक्ति के अर्थ में अंतर आ रहा है। जलाते चलो एक क्रिया है जिसमें दीपक जलाकर चलने के लिए कहा है जबकि जलाते रहो में दीपक जलाने के लिए कहा गया है।

(ख) नीचे कुछ पंक्तियाँ दी गई है। पंक्तियों के सामने उपयुक्त शब्द चुनिए।

1.	बहाते चलो .... तुम वह निरंतर	**(नैया, नाव, नौका)**	**उत्तर –** नाव
	कभी तो तिमिर का .... मिलेगा।	**(तट, तीर, किनारा)**	**उत्तर –** किनारा
2.	रहेगा .... पर दिया एक भी यदि	**(धरा, धरती, भूमि)**	**उत्तर –** धरा
	कभी तो निशा को .... मिलेगा।	**(प्रातः, सुबह, सवेरा)**	**उत्तर –** सवेरा
3.	जला दीप पहला तुम्हीं ने .... की	**(अंधकार, तिमिर, अँधेरा)**	**उत्तर –** तिमिर
	चुनौती .... बार स्वीकार की थी।	**(प्रथम, अव्वल, पहली)**	**उत्तर –** प्रथम

प्रतीक

(क) "कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा"

निशा का अर्थ है- रात।

सवेरा का अर्थ है- सुबह। पता लगाइए कि 'निशा' और 'सवेरा' का इस कविता में क्या-क्या अर्थ हो सकता है।

उत्तर – निशा को बुरी भावना कष्ट बुराई के लिए कविता में प्रयोग किया है और सवेरे को प्रकाश स्नेह से परिपूर्ण भाव, सद्भाव को दिखाने के लिए किया है।

(ख) **कविता में से चुनकर कुछ शब्द नीचे दिए गए हैं। अपने समूह में मिलकर इन पर चर्चा कीजिए और इन्हें उपयुक्त स्थान पर लिखिए।**

दिये	अँधेरा	अमावस	पूर्णिमा	दिवस	तिमिर	नाव	किनारा
शिला	ज्योति	उजेला	तूफ़ान	लौ	स्वर्ण	जलना	बुझना

उत्तर –

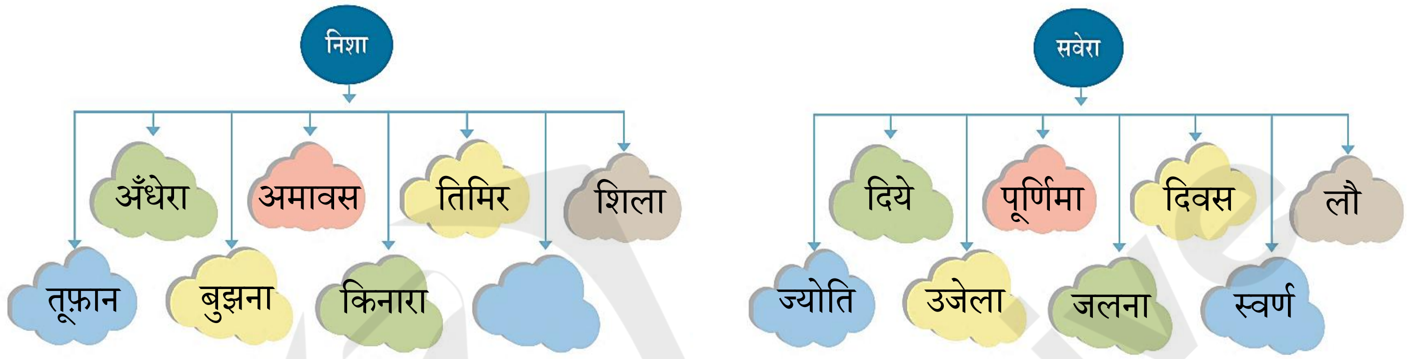

(ग) अपने समूह में मिलकर 'निशा' और 'सवेरा' के लिए कुछ और शब्द सोचिए और लिखिए।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

'निशा' (रात) के लिए शब्द:

- रात्रि
- अंधकार
- संध्या
- तमस्
- रजनी
- श्याम

'सवेरा' (सुबह) के लिए शब्द:

- प्रभात
- भोर
- उषा
- प्रातःकाल
- अरुणोदय
- दिवसारंभ

पंक्ति से पंक्ति

प्रश्न – अब नीचे दी गई पंक्तियों को सरल वाक्यों के रूप में लिखिए-

1. **बहाते चलो नाव तुम वह निरंतर।**

उत्तर – तुम अपनी नाव से निरंतर तिमिर की नदी में चलते चलो।

2. **जलाते चलो ये दिये स्नेह भर-भर।**

उत्तर – प्रेम के दिये आप सदैव भर-भर कर जलाते चलो।

3. **बुझाओ इन्हें, यों न पथ मिले सकेगा।**

उत्तर – तिमिर को समाप्त करो अन्यथा पथ न मिल सकेगा।

egyanarchive

4. मगर विश्व पर आज क्यों दिवस ही में घिरी आ रही है, अमावस निशा-सी।

उत्तर – लेकिन विश्व पर आज बुराई अमावस की रात्रि की तरह घिर आई है।

सा/सी/से का प्रयोग

"घिरी आ रही है अमावस निशा-सी
स्वर्ण-सी जल रही और जलती रहेगी"

विभिन्न शब्दों के साथ सा/सी/से का प्रयोग करते हुए अपनी कल्पना से पाँच वाक्य अपनी लेखन पुस्तिका में लिखिए।

उत्तर –

(i) तुम्हारी मुस्कान **फूल-सी** है।

(ii) तुम्हारा मुख **चंद्रमा-सा** है।

(iii) तुम्हारी आवाज़ **कोयल-सी** है।

(iv) तुम्हारा आचरण अपने **पिताजी-सा** है।

(v) तुम्हारे बाल तुम्हारी **माता-से** है।

पाठ से आगे

आपकी बात

(क) "रहेगा धरा पर दिया एक भी यदि
कभी तो निशा को सवेरा मिलेगा"

आप भी दूसरों के लिए प्रतिदिन बहुत-से अच्छे कार्य करते होंगे अपने उन कार्यों के बारे में बताइए।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

मैं प्रतिदिन भूखे जानवरों को भोजन कराता हूँ तथा पौधों में पानी डालता हूँ। प्यासे लोगों को पानी पिलाता हूँ।

(ख) यदि आपको अपने किसी मित्र को निराश न होने के लिए प्रेरित करना हो तो आप क्या करेंगे? क्या कहेंगे?

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

मैं अपने मित्र से कहूँगा कि वह परेशान न हो। अगली बार मेहनत करके वे परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त कर सकता है।

(ग) क्या आपको कभी किसी ने कोई कार्य करने के लिए प्रेरित किया है? कब? कैसे? उस घटना के बारे में बताइए।

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

हाँ मुझे मेरी माँ ने अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित किया। जब मैं छोटा था। एक दिन मेरे घर के दरवाजे पर भूखा व्यक्ति आया। माँ ने कुछ खाने की चीज़ मुझे दी और कहा कि उस व्यक्ति को मैं देकर आ जाऊँ। दूसरों का सहयोग करना मैं अपनी माँ से सीखा है।

अमावस्या और पूर्णिमा

(क) "भले शक्ति विज्ञान में है निहित वह
कि जिससे अमावस बने पूर्णिमा-सी"

जनवरी 2023 11-30 पौष 1-11 माघ, शक 1944					
रविवार	1 दशमी (शुक्ल)	8 द्वितीया (कृष्ण)	15 अष्टमी (कृष्ण)	22 प्रतिपदा (शुक्ल)	29 अष्टमी (शुक्ल)
सोमवार	2 एकादशी (शुक्ल)	9 द्वितीय (कृष्ण)	16 नवमी (कृष्ण)	23 द्वितीय (शुक्ल)	30 नवमी (शुक्ल)
मंगलवार	3 द्वादशी (शुक्ल)	10 तृतीया (कृष्ण)	17 दशमी (कृष्ण)	24 तृतीया (शुक्ल)	31 दशमी (शुक्ल)
बुधवार	4 त्रयोदशी (शुक्ल)	11 चतुर्थी (कृष्ण)	18 एकादशी (कृष्ण)	25 चतुर्थी (शुक्ल)	
गुरुवार	5 चतुर्दशी (शुक्ल)	12 पंचमी (कृष्ण)	19 द्वादशी (कृष्ण)	26 वंसत पंचमी (शुक्ल)	
शुक्रवार	6 पूर्णिमा	13 षष्ठी (कृष्ण)	20 त्रयोदशी (कृष्ण)	27 षष्ठी (शुक्ल)	
शनिवार	7 प्रतिपदा (कृष्ण)	14 सप्तमी (कृष्ण)	21 अमावस्या	28 सप्तमी (शुक्ल)	

(क) दिए गए महीने में कुल कितने दिन हैं?

उत्तर – दिए गए महीने में कुल 31 दिन हैं।

(ख) पूर्णिमा और अमावस्या किस दिनाँक और वार को पड़ रही है?

उत्तर – अमावस्या दिनाँक 21 और शनिवार को पड़ रही है तथा पूर्णिमा दिनाँक 6 'शुक्रवार' को पड़ रही है।

(ग) कृष्ण पक्ष की सप्तमी और शुक्ल पक्ष की सप्तमी में कितने दिनों का अंतर है?

उत्तर – कृष्ण पक्ष की सप्तमी और शुक्ल पक्ष को सप्तमी में 14 दिनों का अंतर है।

(घ) इस महीने में कृष्ण पक्ष में कुल कितने दिन हैं?

उत्तर – इस महीने में कृष्ण पक्ष में कुल 14 दिन हैं।

(ङ) 'वसंत पंचमी' की तिथि बताइए।

उत्तर – वसंत पंचमी दिनाँक 26 को है।

egyanarchive

<u>आज की पहेली</u>

समय साक्षी है कि जलते हुए दीप
अनगिन तुम्हारे <u>पवन</u> ने बुझाए।
'पवन' शब्द का अर्थ है हवा।

नीचे एक अक्षर-जाल दिया गया है। इसमें 'पवन' के लिए उपयोग किए जाने वाले अलग-अलग नाम या शब्द छिपे हैं। उन्हें खोजकर उन पर घेरा बनायें।

उत्तर –

बा	द	ल	ई	ब
प	अ	नि	ल	या
व	क	स	मी	र
न	ह	वा	यु	ब
मा	रु	त	स	ड़

<u>खोजबीन के लिए</u>

कविता संबंधित कुछ रचनाएँ दी गई हैं इन्हें पुस्तक में देखें व समझें।

- हम सब सुमन एक उपवन के
- बढ़े चलो
- रोज़ बदलता कैसे चाँद भाग 1
- रोज़ बदलता कैसे चाँद भाग 2

उत्तर – (छात्रों को स्वयं करने को कहें।)

1. हम सब सुमन एक उपवन के

यह कविता एकता, भाईचारे और सह-अस्तित्व का संदेश देती है। इसमें हमें यह बताया जाता है कि जैसे बगिया (उपवन) में अलग-अलग प्रकार के फूल मिलकर उसकी शोभा बढ़ाते हैं, वैसे ही हम सब भी मिलजुल कर समाज को सुंदर और सशक्त बना सकते हैं। अलग-अलग रंग, रूप और स्वभाव होने के बावजूद सभी का महत्व बराबर है।

मुख्य भाव:

- एकता में शक्ति है
- विविधता में सुंदरता है
- प्रेम और सहयोग की भावना

---

2. बढ़े चलो

यह कविता प्रेरणा और साहस से भरपूर है। इसमें लगातार आगे बढ़ते रहने, कभी हार न मानने और अपने लक्ष्य को पाने के लिए निरंतर प्रयास करते रहने की प्रेरणा दी गई है। चाहे रास्ता कितना भी कठिन हो, संघर्ष करते रहना चाहिए।

egyanarchive

मुख्य भाव:

- निरंतर प्रयास और संघर्ष
- आत्मविश्वास और धैर्य
- सपनों को साकार करने की प्रेरणा

---

3. रोज़ बदलता कैसे चाँद (भाग 1)

यह कविता चाँद के प्रतिदिन बदलते रूपों के बारे में है। चाँद की कलाएँ कैसे घटती-बढ़ती हैं, वह कैसे रोज़ नया दिखता है — यह सब रोचक ढंग से समझाया गया है। यह बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि भी जगाती है।

मुख्य भाव:

- चाँद के बदलते रूपों की जिज्ञासा
- प्राकृतिक घटनाओं के प्रति आकर्षण
- सरल भाषा में विज्ञान की झलक

---

4. रोज़ बदलता कैसे चाँद (भाग 2)

भाग 2 में चाँद के बदलते रूपों की वैज्ञानिक व्याख्या को आगे बढ़ाया गया है। इसमें चाँद के आकार में बदलाव के पीछे के कारणों को थोड़ा और विस्तार से और रोचक उदाहरणों के साथ समझाया गया है।

मुख्य भाव:

- विज्ञान को सरल और रोचक तरीके से समझाना
- जिज्ञासु मन के प्रश्नों का समाधान
- चाँद के बदलते रूपों का वैज्ञानिक आधार

egyanarchive